

नं. 1

संजीव®

बुकस

संस्कृत-X

(कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए
पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2025 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा जारी प्रश्न बैंक के प्रश्नों का हल सहित समावेश
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित

2026

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 280/-

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : ₹ 280.00

लेजर टाइपसैटिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

चित्र सैटिंग :

एस. वी. कम्प्यूटर, जयपुर

मुद्रक :

आधुनिक बुक बाईन्डर, जयपुर

★ ★ ★ ★ ★ ★

- ❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- ❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

(iii)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

संस्कृत (तृतीय भाषा) एकं पत्रम् कक्षा-10

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र होगा जिसकी परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्नपत्र	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम-क्षेत्रम्	अंकभारः
अपठित-अवबोधनम्	08
रचनात्मकं कार्यम्	15
अनुप्रयुक्तव्याकरणम्	24
पठित-अवबोधनम्	33
	80

(क) खण्डः—अपठितावबोधनम्

08

80-100 शब्दपरिमितः (एकः सरलः गद्यांशः)

- (i) एकपदेन उत्तरम् (प्रश्न द्वयम्) 1 × 2 = 2
- (ii) पूर्णवाक्येन उत्तरम् (प्रश्नमेकम्) 2 × 1 = 2
- (iii) शीर्षकप्रदानम् 1
- (iv) अनुच्छेदाधारितं भाषिकं कार्यम् 1 × 3 = 3
- (अतिलघूत्तरात्मकाः त्रयः प्रश्नाः)
- (अ) वाक्ये कर्तृ-क्रियापदचयनम्
- (ब) विशेषण-विशेष्य-चयनम्
- (स) संज्ञास्थाने सर्वनामप्रयोगः अथवा सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः

(ख) खण्डः—रचनात्मकं कार्यम्

15

1. किमपि विषयं स्वीकृत्य प्रार्थनापत्रं/आत्मीयजनान् प्रति अनौपचारिकं पत्रलेखनम् 04
2. चित्राधारितं वर्णनम् अथवा संकेताधारितं संवादलेखनम् 04
3. अनुवादकार्यम्—हिन्दीभाषायाः षड्वाक्येषु चतुर्णां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादः 04
4. घटनाक्रमस्य संयोजनम् (क्रमरहितानां षड्वाक्यानां क्रमपूर्वकं संयोजनम्) 03

अथवा

संकेताधारितम् अनुच्छेदलेखनम् (षड्वाक्यानि)

(ग) खण्डः—अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्	24
--	-----------

(प्रश्नाः—बहुविकल्पात्मकाः, रिक्तस्थानपूर्तिः, अतिलघूत्तरात्मकाः, लघूत्तरात्मकाः)

(10)

(6)

(2)

(3)

(i) संधिकार्यम्—

03

स्वरसंधिः—वृद्धिः, यण्, अयादि, पूर्वरूपम्, पररूपम्।

व्यंजनसंधिः—श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, अनुस्वारः।

विसर्गसंधिः—विसर्गस्य उत्वं, रुत्वं, लोपः, विसर्गस्थाने श्, ष्, स्।

(ii) समासः—

03

तत्पुरुषः—विभक्तिः।

कर्मधारयः, द्विगुः, द्वन्द्वः, बहुव्रीहिः।

अव्ययीभावः (अनु, उप, सह, निर्, प्रति, यथा)

(iii) कारकाणि—

03

उपपद—विभक्तीनां प्रयोगाः, तेषां सामान्यनियमानां परिचयश्च।

(iv) प्रत्ययाः—

03

कृदन्ताः—तव्यत्, अनीयर्, शतृ, शानच्।

तद्धिताः—मतुप्, इन्, ठन्, त्व, तल्।

स्त्रीप्रत्ययौ—टाप्, डीप्।

(v) अव्ययपदानि—सामान्य-परिचयम्, वाक्ये अव्ययानां प्रयोगः।

03

अपि, इति, इव, एव, उच्चैः, कदा, कुतः, नूनम्, पुरा, मा, इतस्ततः, यत्, अत्र, तत्र, कुत्र, इदानीम्, सम्प्रति, यदा, तदा, यथा-तथा, विना, सहसा, श्वः, ह्यः, अधुना, बहिः, वृथा, कदापि, शनैः, किम्, अधः, उपरि, नीचैः, पुनः।

(vi) वाच्य-परिवर्तनम्—केवलं लट्लकारे (कर्तृ-कर्म-क्रिया)

03

(vii) समयलेखनम्—अडकानां स्थाने शब्देषु (सामान्य-सपाद-सार्ध-पादोन)।

03

(viii) अशुद्धि-संशोधनम्—वचन-लिंग-पुरुष-लकार-विभक्तिदृष्ट्या संशोधनम्।

03

(घ) खण्डः—पठितावबोधनम्	33
---------------------------------	-----------

(i) पाठ्यपुस्तकात् बहुविकल्पात्मक प्रश्नाः (षड् प्रश्नाः)

1 × 6 = 6

(ii) पाठ्यपुस्तकात् अंशत्रयम् (एकः गद्यांशः, एकः पद्यांशः, एकः नाट्यांशः)

प्रति अंशम्—(क) एकपदेन उत्तरम् (प्रश्नमेकम्)

1 × 1 = 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरम् (प्रश्नमेकम्)

2 × 1 = 2

(ग) भाषिककार्यम्—(अतिलघूत्तरात्मकौ द्वौ प्रश्नौ)

1 × 2 = 2

5 + 5 + 5 = 15

(v)

कर्तृ-क्रियापदचयनम्, विशेषणविशेष्यचयनम्, सर्वनामपदस्थाने
संज्ञापदलेखनम्, पर्याय-विलोमपदचयनम्

- | | | |
|-------|--|------------------|
| (iii) | पाठ्यपुस्तकात् पद्यांशस्य सूक्तवचनस्य वा हिन्दीभाषायां सप्रसंग भावार्थलेखनम् | 2 |
| (iv) | अन्वयलेखनम्-रिक्तस्थानपूर्तिमाध्यमेन | 2 |
| (v) | प्रश्ननिर्माणम् (त्रयः) | $1 \times 3 = 3$ |
| (vi) | पाठप्रसंगानुसारं शब्दार्थचयनम् (बहुविकल्पात्मक प्रश्नद्वयम्) | $1 \times 2 = 2$ |
| (vii) | एकस्य गद्यपाठस्य हिन्दीभाषायां सारलेखनम् | 3 |

निर्धारितपुस्तकानि :

शेमुषी-द्वितीयो भागः—राष्ट्रीय-शैक्षिक-अनु. परिषदा प्रकाशितम्

नोट- विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

शेमुषी-द्वितीयो भागः

मङ्गलम्	1
प्रथमः पाठः शुचिपर्यावरणम्	2-14
द्वितीयः पाठः बुद्धिर्बलवती सदा	15-23
तृतीयः पाठः शिशुलालनम्	24-37
चतुर्थः पाठः जननी तुल्यवत्सला	38-48
पंचमः पाठः सुभाषितानि	49-64
षष्ठः पाठः सौहार्दं प्रकृतेः शोभा	65-84
सप्तमः पाठः विचित्रः साक्षी	85-96
अष्टमः पाठः सूक्तयः	97-107
नवमः पाठः भूकम्पविभीषिका	108-116
दशमः पाठः अन्योक्तयः	117-127
अपठित-अवबोधनम्	
80-100 शब्दपरिमिताः सरल-गद्यांशाः	128-145
रचनात्मकं कार्यम्—	
1. प्रार्थनापत्रं/आत्मीयजनान् प्रति अनौपचारिकं पत्रलेखनम्	146-177
2. चित्राधारितं वर्णनम्	178-195
3. संकेताधारितम् संवादलेखनम्	196-220
4. अनुवाद-कार्यम्	221-237
(हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद)	
5. घटनाक्रमस्य संयोजनम्	238-249
6. संकेताधारितम् अनुच्छेद-लेखनम्	250-257

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्-

(i) सन्धिकार्यम्	258-278
(ii) समासः	278-296
(iii) कारकाणि	296-315
(iv) प्रत्ययज्ञानम्	315-332
(v) अव्ययपदानि	332-344
(vi) वाच्यपरिवर्तनम्	344-357
(vii) समयलेखनम्	357-366
(viii) अशुद्धि-संशोधनम्	367-378

माध्यमिक परीक्षा, 2025

तृतीय भाषा—संस्कृतम्

समय : 3.15 (सपादहोरात्रयम्)

पूर्णाङ्कः 80

परीक्षार्थिभ्यः सामान्यनिर्देशाः —

1. परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रस्योपरि नामाङ्कः अनिवार्यतः लेख्यः।
2. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
3. प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरं उत्तरपुस्तिकायामेव देयम्।
4. प्रत्येकं प्रश्नभागस्य उत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखितव्यम्।

खण्ड-अ

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः—

(17×1=17)

- | | | | | | |
|--------|--|--|--|--|---|
| (i) | का सभ्यता निसर्गे समाविष्टा न स्यात्? | | | | |
| | (अ) नूतना (ब) पाषाणी (स) प्राचीना (द) अर्वाचीना | | | | 1 |
| (ii) | राजपुत्र-राजसिंहस्य भार्या आसीत्— | | | | 1 |
| | (अ) सत्यवती (ब) लक्ष्मीवती (स) भानुमती (द) बुद्धिमती | | | | 1 |
| (iii) | कुशलवयोः पितुर्नाम किम् अस्ति? | | | | 1 |
| | (अ) लक्ष्मणः (ब) भरतः (स) रामः (द) शत्रुघ्नः | | | | 1 |
| (iv) | कः क्षेत्रकर्षणं कुर्वन् आसीत्? | | | | 1 |
| | (अ) कृषकः (ब) शिक्षकः (स) वणिक् (द) धावकः | | | | 1 |
| (v) | मनुष्याणां शरीरस्थः महान् शत्रुः किम्? | | | | 1 |
| | (अ) दौर्बल्यम् (ब) सौन्दर्यम् (स) आलस्यम् (द) उद्योगम् | | | | 1 |
| (vi) | निर्धनः जनः स्ववित्तेन स्वपुत्रं कुत्र प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः? | | | | 1 |
| | (अ) महाविद्यालये (ब) देवालये (स) विद्यालये (द) कार्यालये | | | | 1 |
| (vii) | कस्य उपशमनस्य स्थिरोपायः नास्ति? | | | | 1 |
| | (अ) जलप्लावनम् (ब) रोगस्य (स) अज्ञानस्य (द) भूकम्पस्य | | | | 1 |
| (viii) | प्रकृतिः + एव इत्यस्य सन्धिपदम् अस्ति— | | | | 1 |
| | (अ) प्रकृतिः एव (ब) प्रकृतिरेव (स) प्रकृत् एव (द) प्रकृदेव | | | | 1 |
| (ix) | व्यञ्जनसन्धेः उदाहरणमस्ति— | | | | 1 |
| | (अ) कुर्वन्नासीत् (ब) तयोरेकः (स) नोत्थितः (द) विद्यालयः | | | | 1 |
| (x) | विसर्गसन्धेः उदाहरणमस्ति— | | | | 1 |
| | (अ) नास्ति (ब) अनुक्तमपि (स) योजकस्तत्र (द) भोजनान्ते | | | | 1 |
| (xi) | “जगदीशः” इत्यस्य पदस्य सन्धिविच्छेदोऽस्ति— | | | | 1 |
| | (अ) जगत + ईशः (ब) जगत् + इशः (स) जगद + इशः (द) जगत् + ईशः | | | | 1 |
| (xii) | “अभितः” इति पदयोगे का विभक्तिः भवति? | | | | 1 |
| | (अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी | | | | 1 |
| (xiii) | “नमः” इति पदयोगे का विभक्तिः भवति? | | | | 1 |
| | (अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) षष्ठी | | | | 1 |
| (xiv) | “अन्वधावत्” इत्यत्र पदे कः उपसर्गः? | | | | 1 |
| | (अ) अन्व (ब) उप (स) आङ् (द) अनु | | | | 1 |

- (xv) 'निस्सरन्ती' इत्यत्र उपसर्ग शब्दञ्च पृथक् कृत्वा लिखत— 1
 (अ) निर् + सरन्ती (ब) निः + सरन्ती (स) निस्स + रन्ती (द) निस् + सरन्ती
- (xvi) लिख् - धातोः लट् - लकारस्य रूपमस्ति— 1
 (अ) लेखिष्यति (ब) अलिखत् (स) लिखतु (द) लिखति
- (xvii) पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहं रोदिमि रेखांकितपदे को धातुः? 1
 (अ) रुद्र-धातुः (ब) रम्-धातुः (स) रुद्-धातुः (द) रोद्र-धातुः
2. निर्देशानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत— (5×1=5)
 (i) शृगालः आह। (हस् + शत्) 1
 (ii) सा माता स्वगुरुं प्रकटयति (कृतज्ञ + तल्) 1
 (iii) श्रिया वाणी। (युक्तः + टाप्) 1
 (iv) चौरस्य प्रबुद्धः अतिथिः। (पादध्वनिशब्दे तृतीया) 1
 (v) अत्र भ्रमराः गुञ्जन्ति। (पुष्पशब्दस्य सप्तमीबहुवचनम्) 1
3. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत।
 महाराणाप्रतापस्य जन्म 1540 ख्रीस्ताब्दस्य मईमासस्य नवमदिनांके मेवाडस्थप्रसिद्धे कुम्भलगढ-दुर्गे महाराणा-
 उदयसिंहस्य पुत्ररूपेण अभवत्। मुगलशासकस्य अकबरस्य प्रबलविरोधिरूपेण वीरोऽयं प्रसिद्धः। तस्य अश्वस्य नाम
 'चेतक' इति आसीत्। महाराणाप्रतापः 'कीका' इति नाम्ना अपि प्रथितः आसीत्। महाराणा-प्रतापस्य एकः रामप्रसादनामकः
 प्रसिद्धः गजः अपि आसीत्।
- (क) एकपदेन उत्तरत— (1×2=2)
 (i) महाराणा-प्रतापस्य पितुर्नाम किम् आसीत्? 1
 (ii) महाराणाप्रतापस्य अश्वस्य नाम किमासीत्? 1
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— (2)
 (i) महाराणाप्रतापस्य जन्म कदा अभूत्? 1
- (ग) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (1)
 (घ) भाषिककार्यम्— (1×3=3)
 (i) "प्रसिद्धः गजः" इत्यत्र विशेष्यपदं लिखत। 1
 (ii) "वाजी" इत्यस्य पर्यायपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत। 1
 (iii) "एकः रामप्रसाद नामकः प्रसिद्धः गजः अपि आसीत्।" इत्यत्र "आसीत्" इति क्रियापदस्य कर्तृपदं
 लिखत। 1

खण्ड-ब

4. राजन्! अलम् अतिदाक्षिण्येन। रेखांकितपदे विभक्तिं तत्कारणञ्च लिखत। 2
5. अधोलिखितौ संख्यावाचिशब्दौ संस्कृते लिखत। (1×2=2)
 (अ) 105 (ब) 150
6. धेनूनां माता सुरभिः आसीत्। रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत। 2
7. अधोलिखितश्लोकस्य हिन्दीभाषायां सप्रसंगं भावार्थं लिखत। 2
 विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम्।
 अश्वचेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः॥
8. अधोलिखितश्लोकस्य अन्वयं मञ्जूषातः पदानि चित्वा पूरयत। 2
 एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।
 न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना॥
 अन्वयः एकेन (i)..... सरसः या (ii)..... भवेत्, (iii)..... तीरवासिना (iv).....
 सा (शोभा) न (भवति)॥

शोभा, परितः, राजहंसेन, बकसहस्रेण

9. स्वपाठ्यपुस्तकात् श्लोकद्वयं लिखत यद् अस्मिन् प्रश्नपत्रे न स्यात्। 2
10. अधोलिखितपाठयोः कस्यचिदेकस्य पाठसारं हिन्दीभाषायां लिखत। 2
- (i) शिशुलालनम् (ii) भूकम्पविभीषिका।

खण्ड-स

11. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत।
कश्चित् कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्। तयोः बलीवर्दयोः एकः शरीरेण दुर्बलः जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्। अतः कृषकः तं दुर्बलं वृषभं तोदनेन नुदन् अवर्तत। सः ऋषभः हलमूढ्वा गन्तुमशक्तः क्षेत्रे पपात। क्रुद्धः कृषीवलः तमुत्थापयितुं बहुवारं यत्नमकरोत्। तथापि वृषः नोत्थितः।
- (क) एकपदेन उत्तरत— 1
कृषकः किं कुर्वन्नासीत्?
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— 2
वृषभः कुत्र पपात?
- (ग) भाषिककार्यम्— (1×2=2)
- (i) “कश्चित् कृषकः” इत्यत्र विशेषणपदं किम्? 1
- (ii) “क्रुद्धः कृषीवलः तमुत्थापयितुं बहुवारं यत्नमकरोत्।” इत्यत्र क्रिया पदं किम्? 1

अथवा

अग्रिमे दिने स आरक्षी चौर्याभियोगे तं न्यायालयं नीतवान्। न्यायाधीशो बंकिमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक्-पृथक् विवरणं श्रुतवान्। सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षिणं च दोषभाजनम् किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतुं नाशक्नोत्। ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्। अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं पुनः स्थापितवन्तौ।

- (क) एकपदेन उत्तरत— 1
न्यायाधीशस्य नाम किमासीत्?
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— 2
न्यायाधीशः किमर्थं निर्णेतुं नाशक्नोत्?
- (ग) भाषिककार्यम्— (1×2=2)
- (i) “सर्वं वृत्तम् अवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत्।” इत्यत्र सर्वनामपदं किम्? 1
- (ii) “अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्।” इत्यत्र कर्तृपदं किम्? 1
12. अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत।
रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयता-
मम्भोदा बहवो भवन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा,
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥
- (क) एकपदेन उत्तरत— 1
अम्भोदाः कुत्र सन्ति?
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— 2
वृष्टिभिः वसुधां के आर्द्रयन्ति?
- (ग) भाषिककार्यम्— (1×2=2)
- (i) “गर्जन्ति केचिद् वृथा।” इत्यत्र क्रियापदं किम्? 1
- (ii) “दीनं वचः” इत्यत्र विशेषणपदं किम्? 1

अथवा

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते॥

- (क) एकपदेन उत्तरत— 1
छायां कः ददाति?

- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— 2
अस्माभिः कीदृशः वृक्षः सेवितव्यः?
- (ग) भाषिककार्यम्— (1×2=2)
(i) “महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।” इत्यत्र विशेषणपदं किम्? 1
(ii) “यदि दैवात् फलं नास्ति” इत्यत्र क्रियापदं किम्? 1
13. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत।
रामः - एष भवतोः सौन्दर्यावलोकजनितेन कौतुहलेन पृच्छामि-क्षत्रियकुल-पितामहयोः सूर्यचन्द्रयोः को वा भवतोर्वंशस्य कर्ता?
लवः - भगवान् सहस्रदीधितिः।
रामः - कथमस्मत्समानाभिजनौ संवृत्तौ?
विदूषकः - किं द्वयोरप्येकमेव प्रतिवचनम्?
लवः - भ्रातरावावां सोदर्यौ।
रामः - समरूपः शरीरसन्निवेशः। वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्।
लवः - आलां यमलौ।
रामः - सम्प्रति युज्यते। किं नामधेयम्?
(क) एकपदेन उत्तरत— 1
“कथमस्मत्समानाभिजनौ संवृत्तौ?” इति कः पृच्छति?
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— 2
कुशलवयोः वंशस्य कर्ता कः?
- (ग) भाषिककार्यम्— (1×2=2)
(i) “आवां यमलौ।” वाक्येऽस्मिन् सर्वनामपदं किम्? 1
(ii) “भगवान् सहस्रदीधितिः।” इत्यत्र विशेषणपदं किम्? 1
- अथवा**
- काकः- आम् सत्यं कथितं त्वया- वस्तुतः वनराजः भवितुं तु अहमेव योग्यः।
पिकः- (उपहसन्) कथं त्वं योग्यः वनराजः भवितुं, यत्र तत्र का-का इति कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुली करोषि। न रूपम्, न ध्वनिरस्ति। कृष्णवर्णम् मेध्यामेध्यभक्षकं त्वां कथं वनराजं मन्यामहे वयम्?
काकः- अरे! अरे! किं जल्पसि? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि त्वं किं गौराङ्गः? अपि च विस्मयते किं यत् मम सत्यप्रियता तु जनानां कृते उदाहरणस्वरूपा — ‘अनृतं वदसिचेत् काकः दशेत्।’
(क) एकपदेन उत्तरत— 1
वस्तुतः वनराजः भवितुं तु अहमेव योग्यः। इति कः कथयति?
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— 2
कः वातावरणं कर्कशध्वनिना आकुलीकरोति?
- (ग) भाषिककार्यम्— (1×2=2)
(i) किं जल्पसि? इत्यत्र क्रियापदं किम्? 1
(ii) कृष्णवर्णः अहं। इत्यत्र विशेषणपदं किम्? 1
14. यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत। (1+1+1=3)
(क) चतुर्णां युगानां समाहारः (समस्तपदं लिखत) 1
(ख) पितरौ (समासविग्रहपदं लिखत) 1
(ग) यथाशक्ति (समासस्य नाम लिखत) 1
15. मञ्जूषायाः प्रदत्तैः समुचितैः अव्ययपदैः वाक्यानि पूरयत। (1+1+1=3)
यावत्; तदा; तर्हि
(क) यदा मेघाः गर्जन्ति वर्षा भवति। 1
(ग) यदि पुस्तकं न पठिष्यामः अनुत्तीर्णाः भविष्यामः। 1

(ग) भोजनं न मिलति तावत् बुभुक्षा भवति।

1

खण्ड-द

16. भवान् नगेन्द्रः, राजकीय - उच्च माध्यमिक - विद्यालयः, हरिनगरस्य छात्रः रुग्णताकारणेन दिनत्रयस्य अवकाशाय प्राचार्याय प्रार्थनापत्रं लिखतु। 4

अथवा

भवतः नगरस्य उद्याने स्वच्छता नास्ति, बालक्रीडायाः साधनानि अपि न सन्ति। अतः व्यवस्थायाः कृते नगरपालिकाध्यक्षाय पत्रं मञ्जूषायाः उचितपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूर्यतु। 4

मनांसि, निवेदनम्, परिक्षेत्रे, नगरपालिकाध्यक्षः, नगरस्य, कृपया, कर्मकरान्, सन्ति

सेवायाम्

(i)

नगरपालिका

जयनगरम्

विषयः - नगरस्य उद्याने स्वच्छता-बालक्रीडायाः साधनानि इति क्रमे।
महोदये!

(ii) अस्ति यत् अस्माकं (iii) उद्यानस्य (iv) स्वच्छता नास्ति।
तत्र बालक्रीडार्थं क्रीडकानि अपि न (v) । क्रीडां विना अस्माकं (vi) न रमन्ते।
अतः (vii) स्वच्छतायाः समुचित-व्यवस्थायै (viii) आदिशयन्तु।

सधन्यवादम्

प्रार्थी

महेशः

बी-3/76

पुष्पविहारम्

जयनगरम्

17. अधः प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन अष्ट-वाक्यानि निर्माय लिखत। 4

रेलस्थानकम्, रेलयानम्, यात्रिणः, आरोहन्ति, अवरोहन्ति, गच्छन्ति, आगच्छन्ति, उपविशन्ति



अथवा

मञ्जूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा अध्ययन विषये पितापुत्रयोः संवादं पूर्यतु। 4

अध्यापकः, काठिन्यम्, व्यवस्थां, स्थानान्तरणम्, विषये, अंग्रेजी-विषये, समीचीनम्, अध्ययनम्

- पिता - गोपेश! तव (1) कथं प्रचलति?
 गोपेशः - हे पितः! अध्ययनं तु (2) प्रचलति।
 पिता - कोऽपि विषयः एतादृशः अस्ति यस्मिन् त्वं (3) अनुभवसि?
 गोपेशः - आम्! (4) मम स्थितिः सम्यक्नास्ति। यतो हि अस्माकं विद्यालये अंग्रेजी-
 विषयस्य (5) नास्ति।
 पिता - त्वं पूर्वं तु माम् अस्मिन् (6) न उक्तवान्।
 गोपेशः - पूर्वं तु अध्यापकः आसीत् परं अधुना तस्य (7) अन्यत्र अभवत्।
 पिता - अस्तु। अहं तव कृते अध्यापकस्य (8) करिष्यामि।

18. अधोलिखितेषु वाक्येषु केषाञ्चित् चतुर्णां वाक्यानां संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत। 4
- (i) विद्यालय के चारों ओर आम के पेड़ हैं।
 (ii) राजा भिक्षुकों को भोजन देता है।
 (iii) मोर नाचता है।
 (iv) हम सब रामायण पढ़ेंगे।
 (v) अयोध्या के राजा दशरथ थे।
 (vi) बालकों को मिठाई पसन्द है।
19. अधोलिखितानि वाक्यानि क्रमरहितानि सन्ति। यथाक्रमं संयोजनं कृत्वा लिखत। 3
- (i) तदा तस्य मुखात् रोटिका अपि जले पतति।
 (ii) एकदा कश्चित् कुक्करः एकां रोटिकां प्राप्नोत्।
 (iii) तदा सः नदीजले स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्।
 (iv) सः कुक्करः रोटिकां प्राप्तुं तेन सह युद्धार्थं मुखम् उद्घाटयति।
 (v) सः रोटिकां मुखे गृहीत्वा गच्छन् आसीत्।
 (vi) स्वप्रतिबिम्बम् अन्यं कुक्कुरं मत्वा सः तस्य रोटिकां प्राप्तुम् अचिन्तयत्।

अथवा

- अधः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि “धेनु-महिमा” इति विषये लिखत। 3

दुग्धम्, पोषयति, श्रीकृष्णः, कामधेनुः, गोमूत्रम्, माता, नवनीतम्, पञ्चामृतम्।

संस्कृत-कक्षा-10

शेमुषी-द्वितीयो भागः

मङ्गलम्

(1)

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम् ।
अदीनाः स्याम शरदः शतम् । भूयश्च शरदः शतात् ॥ (यजुर्वेद 36.24)

अन्वयः—ॐ देवहितं तत् शुक्रं चक्षुः पुरस्तात् उच्चरत् । (वयं) शतं शरदः पश्येम । (वयं) शतं शरदः जीवेम । (वयं) शतं शरदः शृणुयाम । (वयं) शतं शरदः प्रब्रवाम । (वयं) शतं शरदः अदीनाः स्याम । च शतात् शरदः भूयः ।

कठिन शब्दार्थ—देवहितम् = देवताओं द्वारा धारण किया हुआ । **चक्षुः** = नेत्र, आँख । **पुरस्तात्** = आगे, सर्वप्रथम, पहले स्थान पर, पूर्व में । **शरदः** = वर्ष । **अदीनाः** = जो दीन नहीं हों, स्वावलम्बी । **भूयः** = फिर से ।

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ—हे परमपिता परमात्मा! देवों द्वारा निरूपित यह शुक्ल वर्ण का नेत्र रूप (सूर्य) पूर्व दिशा में ऊपर उठ चुका है । हम सब सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक जीते रहें । सौ वर्षों तक सुनते रहें । सौ वर्षों तक शुद्ध रूप से बोलते रहें । सौ वर्षों तक स्वावलम्बी (अदीन) बने रहें और यह सब सौ वर्षों से भी अधिक चलता रहे ।

(2)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो—
ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे. अस-
न्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ (ऋग्वेद 1.89.1)

अन्वयः—नः विश्वतः आ भद्राः क्रतवः यन्तु, अदब्धासः, अपरीतास, उद्भिदः (स्युः) । असन् अप्रायुवः सदमिद् रक्षितारः देवाः दिवे दिवे यथा नः वृधे ।

कठिन शब्दार्थ—नः = हमारे लिए । **भद्राः** = कल्याणकारी । **क्रतवः** = सङ्कल्प, विचार । **यन्तुः** = आएँ । **विश्वतः** = चारों ओर से । **उद्भिदः** = प्रकट करने वाले ।

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ—हमारे पास चारों ओर से ऐसे कल्याणकारी विचार आते रहें जो किसी से न दबें, उन्हें कहीं से बाधित न किया जा सके (अपरीतासः) एवं अज्ञात विषयों को प्रकट करने वाले (उद्भिदः) हों । प्रगति को न रोकने वाले (अप्रायुवः) तथा सदैव रक्षा में तत्पर देवगण प्रतिदिन (सदैव) हमारी समृद्धि और कल्याण के लिए तत्पर रहें ।

प्रथमः पाठः

**शुचिपर्यावरणम्
(पवित्र/शुद्ध पर्यावरण)**

—कवि हरिदत्त शर्मा

पाठ परिचय—प्रस्तुत पाठ आधुनिक संस्कृत कवि हरिदत्त शर्मा के रचना संग्रह 'लसल्लतिका' से संकलित है। इसमें कवि ने महानगरों की यान्त्रिक-बहुलता से बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह लौहचक्र तन-मन का शोषक है, जिससे वायुमण्डल और भूमण्डल दोनों मलिन हो रहे हैं। कवि महानगरीय जीवन से दूर, नदी-निर्झर, वृक्षसमूह, लताकुञ्ज एवं पक्षियों से गुञ्जित वन-प्रदेशों की ओर चलने की अभिलाषा व्यक्त करता है।

अन्वय, कठिन शब्दार्थ, सप्रसंग हिन्दी अनुवाद/भावार्थ एवं पठितावबोधनम्—

(1)

दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम् ।

शुचि-पर्यावरणम् ॥

महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम् ।

मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम् ॥

दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम् । शुचि... ॥

अन्वयः—अत्र जीवितं दुर्वहं जातम्, प्रकृतिः एव शरणम् । पर्यावरणं शुचि (स्यात्) । महानगरमध्ये कालायसचक्रम् अनिशं चलत्, मनः शोषयत्, तनुः पेषयद् सदा वक्रं भ्रमति । अमुना दुर्दान्तैः दशनैः जनग्रसनं नैव स्यात् । पर्यावरणं शुचि (स्यात्) ।

कठिन शब्दार्थ—जीवितम् = जीवन (जीवनम्) । **दुर्वहम्** = कठिन, दूभर (दुष्करम्) । **जातम्** = हो गया है (यातम्) । **शुचि** = पवित्र, शुद्ध (पवित्रम्, शुद्धम्) । **कालायसचक्रम्** = लोहे का चक्र (लौहचक्रम्) । **अनिशम्** = दिन-रात (अहर्निशम्) । **शोषयत्** = सुखाते हुए (शुष्कीकुर्वत्) । **तनुः** = शरीर (शरीरम्) । **पेषयद्** = पीसते हुए (पिष्टीकुर्वन्) । **वक्रम्** = टेढ़ा (कुटिलम्) । **अमुना** = इससे (अनेन) । **दुर्दान्तैः** = भयानक से (भयङ्करैः) । **दशनैः** = दाँतों से (दन्तैः) । **जनग्रसनम्** = मानव विनाश (जनभक्षणम्) ।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शोमुषी-द्वितीयो भागः' के 'शुचिपर्यावरणम्' नामक पाठ से लिया गया है। मूलतः यह पाठ कवि हरिदत्त शर्मा द्वारा रचित काव्य 'लसल्लतिका' से संकलित है। इस अंश में महानगरों में बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कवि कहता है कि—

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ—इस संसार में जीवन अत्यधिक कठिन (दूभर) हो गया है, अतः प्रकृति की ही शरण में जाना चाहिए। पर्यावरण शुद्ध बना रहे। महानगरों के मध्य में प्रदूषणरूपी लौहचक्र दिन-रात चलता हुआ, मन को सुखाता हुआ और शरीर को पीसता हुआ सदा टेढ़ा चलता है। इसके भयानक दाँतों से मानव-विनाश नहीं होना चाहिए। अतः पर्यावरण शुद्ध होना चाहिए।

पठितावबोधनकार्यम्—

निर्देशः—उपर्युक्तपद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानामुत्तराणि यथानिर्देशं लिखत—

प्रश्नाः—(क) एकपदेन उत्तरत—

अत्र किम् दुर्वहं जातम्?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

महानगरमध्ये अनिशं किं चलति?

(ग) भाषिककार्यम्—

(i) 'कालायसचक्रम्' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

(ii) 'शुचि-पर्यावरणम्'—इत्यत्र किं विशेष्यपदम्?

उत्तराणि—(क) जीवितम्।

(ख) महानगरमध्ये अनिशं कालायसचक्रं चलति।

(ग) (i) भ्रमति। (ii) पर्यावरणम्।

(2)

कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।

वाष्पयानमाला संधावति वितरन्ती ध्वानम्॥

यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संसरणम्। शुचि...॥

अन्वयः—शतशकटीयानं कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति। वाष्पयानमाला ध्वानं वितरन्ती संधावति। हि यानानाम् अनन्ताः पङ्क्तयः (सन्ति), संसरणं कठिनम् (अस्ति)। शुचि पर्यावरणम् (स्यात्)।

कठिनं शब्दार्थ—शतशकटीयानम् = सैकड़ों मोटरगाड़ियाँ (शकटीयानानां शतम्)। कज्जलमलिनम् = काजल जैसा मलिन (काला) (कज्जलेन मलिनम्)। धूमम् = धुआँ (वाष्पः)। मुञ्चति = छोड़ती है (त्यजति)। वाष्पयानमाला = रेलगाड़ी की पंक्ति (वाष्पयानानां पंक्तिः)। ध्वानम् = कोलाहल (ध्वनिम्)। वितरन्ती = देती हुई (ददती)। संधावति = तेज दौड़ती है (तीव्रं धावति)। संसरणम् = चलना (सञ्चलनम्)।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः' के 'शुचिपर्यावरणम्' नामक पाठ से उद्धृत किया गया है। मूलतः यह पाठ कवि हरिदत्त शर्मा द्वारा विरचित काव्य 'लसल्लतिका' से संकलित है। इस अंश में महानगरों में वाहनों के कोलाहल एवं धुआँ से बढ़ते हुए प्रदूषण का वर्णन करते हुए कहा गया है कि—

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ—(महानगरों में) सैकड़ों मोटरगाड़ियाँ काजल के समान मलिन (काला) धुआँ छोड़ती रहती हैं। रेलगाड़ियों की पंक्ति कोलाहल करती हुई दौड़ती है। क्योंकि वाहनों की अनन्त पंक्तियाँ हैं, इसलिए चलना भी कठिन हो गया है। अतः पर्यावरण शुद्ध रहना चाहिए।

पठितावबोधनकार्यम्—

[माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2021-22 (सं.)]

प्रश्नाः—(क) एकपदेन उत्तरत—

केषाम् अनन्ताः पङ्क्तयः सन्ति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

शतशकटीयानं कीदृशं धूमं मुञ्चति?

(ग) भाषिककार्यम्—

(i) 'कज्जलमलिनं धूमम्' अनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?

(ii) 'वाष्पयानमाला' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

उत्तराणि—(क) यानानाम्।

(ख) शतशकटीयानं कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति।

(ग) (i) धूमम्। (ii) संधावति।

अथवा

प्रश्नाः—(क) एकपदेन उत्तरत—

का संधावति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

कठिनं संसरणं कथम्?

(ग) भाषिककार्यम्—

(i) "कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम्" इत्यत्र क्रियापदं किम्?

(ii) "यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः" इत्यत्र विशेषणपदं किम्?

उत्तराणि—(क) वाष्पयानमाला।

(ख) हि यानानां पङ्क्तयः अनन्ताः, अतः संसरणं कठिनम्।

(ग) (i) मुञ्चति। (ii) अनन्ताः।

(3)

वायुमण्डलं भृशं दूषितं न हि निर्मलं जलम्।

कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं समलं धरातलम्॥

करणीयं बहिरन्तर्जगति तु बहु शुद्धीकरणम्। शुचि...॥